[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3561

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

"संगीत में रंगो का समन्वय"
(रागमाला चित्रों के विशेष संदर्भ में)

डॉ. कुमकुम माथुर
प्राध्यापक 'चित्रकला'
शा0कमला राजा कन्या
महाविद्यालय,ग्वालियर (म0प्र0)

वात्सायन मुनि के कामसूत्र (2 ई–3 ई शताब्दी ई0) नामक ग्रन्थ में तीसरे अध्याय के अन्तर्गत चौसठ कलाओं का विवेचन किया गया है। जिनमें प्रथम स्थान पर गीतं (संगीत) द्वितीय स्थान पर बाद्यं (वाद्य– वादन), तृतीय स्थान पर नृत्यं (नाच) तथा चतुर्थ स्थान पर आलेख्यं अर्थात 'चित्रकला' को माना है। 'कामसूत्र के प्रथम प्राधिकरण के तीसरे अध्याय की 'जयमंगला' नामक टीका (11–12वी शताब्दी) पण्डित यशोधर द्वारा प्रस्तुत की गई। जिसके अन्तर्गत आलेख्य (चित्रकला) के छह अंग वर्णित किये गये। 1. रूपभेद 2. प्रमाण, 3. भाव, 4. लावण्य योजना, 5. सादृश्य एवं छटवां वर्णिका–भंग। ''वर्णिका–भंग'' अर्थात विभिन्न रंगों का उचित सन्तुलन के साथ संयोजन। 'षडंग' (चित्रकला के छह अंगों) में वर्णिका भंग का स्थान अंत में इसीलिये रखा गया क्योंकि यह 'षडंग' साधना का चरम बिन्दु है। शेष पांचों अंगों की हम कल्पना कर सकते हैं परन्तु वर्णिका भंग हेतु तूलिका द्वारा दीर्घ अभ्यास करना आवश्यक है। **वर्ण ज्ञानं सदा नास्ति किं तस्य जपपूजनैः** अर्थात वर्णज्ञान के बिना 'षडांग' के पांच अंगों की साधना करना व्यर्थ है।[1]

गीतं वाद्यं तथा नृत्तं त्रयं संगीतमुच्यते ।। (संगीत रत्नाकर (।।2।।)[2]

गीतं वाद्यं तथा नत्य तीनों विधायें संगीत के अन्तर्गत आती है। इनके सम्मिलित प्रयोग से संगीत में भाव सम्प्रेषण की क्षमता बढ़ती है। कलाओं में संगीत चित्र एवं काव्य कलाएं विशेष महत्व रखती है। ललितकला के लिये आवश्यक है कि उसमें सौन्दर्य, माधुर्य, सहजता, सरलता, प्रवाह एवं तेजस्विता अर्थात ओज हो। 'लयात्मकता' लालित्य का प्रमुख गुण है। संगीत, काव्य एवं चित्रकला में ये सभी गुण विद्यमान रहते हैं। वास्तव में ललित कलाएं हृदय को शक्ति एवं आनंद प्रदाय करती है। संगीत में एक अतिरिक्त गुण यह है कि यह कला मनुष्यों के अतिरिक्त प्रकृति, पशु–पक्षियों को भी अपने आकर्षण से प्रभावित करती है। अन्य ललितकलाओं में यह सामर्थ्य अपेक्षाकृत कम है। काव्य, शिल्प, वास्तु एवं चित्रकला, बुद्धि के संयोग से भावों को उत्कर्ष कराने में सफल होती हैं। संगीत, काव्य एवं चित्र तीनों कलाओं में एक तत्व अवश्य उपस्थित रहता है, वो है 'लय'। 'लय' पर तीनों कलाओं का सौन्दर्य अवलंबित रहता है। चूंकि संगीत में 'लय' व्यक्त करने हेतु किसी भौतिक उपादान की आवश्यकता नहीं पड़ती इसीलिये 'संगीत' विशेषतः 'गान' कला अन्य ललित कलाओं में अग्रणी मान्य की गई है।[3]

चित्र, काव्य एवं संगीत, ये तीनों ललितकलाएं एक दूसरे से पृथक होते हुये भी परस्पर जुड़ी हुई है। संगीतकार धुन बनाते समय किसी स्वरूप/चित्र की कल्पना करता है, कवि काव्य सृजन करते समय अमूर्त स्वरों को छन्द का वाहन बनाता है। चित्रकार अथवा शिल्पकार शब्द के आश्रय से विषय वस्तु को अपने मस्तिष्क में रखकर कोई आकार देता है तत्पश्चात मूर्ति अथवा चित्र सृजित होता है। इसके अतिरिक्त कभी कभी संगीतकार शब्द के आधार पर धुन का निर्माण करता है, कवि किसी चित्र को देखकर काव्य का सृजन करता है एवं कभी चित्रकार काव्य श्रवण कर अथवा स्वर लहरियों में खोकर कृति की रचना करता है। इसीलिये कभी किसी चित्रकृति को देखकर कविता का सृजन हो जाता है तो कभी किसी काव्य रचना को संगीतबद्ध करने का मन होता है, तो कभी कोई राग या रागिनी चित्र के माध्यम से सजीव हो उठती है।

रागों पर आधारित चित्र कृतियां '**रागमाला**' कहलाती है। रागमाला का स्पष्ट एवं साधारण अर्थ है 'रागों की माला' अथवा रागों की श्रृंखला। रागमाला चित्र भारतीय संगीत, काव्य एवं लघु चित्रण परम्परा का अभूतपूर्व संगम हैं। इन चित्रों में कलाकारों ने प्रतीकात्मक–चित्रण, प्राकृतिक सौन्दर्य, विभिन्न रंगों के चमत्कारों द्वारा रागों से सम्बद्ध भावों की अनूठी अभिव्यक्ति की है। अधिकांशतः रागमाला– चित्रण लघु चित्रों के रूप में प्राप्त होता है। कहीं कहीं रागमाला' भित्ति चित्रण के रूप में भी दृष्टव्य है। कवि अथवा संगीतज्ञ शब्दों तथा स्वरों के माध्यम से अपनी रचना को आकर्षक बनाते हैं। रागमाला चित्रों में कलाकारों ने संगीत एवं रचना के भाव तथा लक्षणों की रंगों द्वारा चाक्षुष प्रस्तुति लघु चित्रों के रूप में की है।

16 वी शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक काव्य, संगीत एवं चित्रकला तीनों विधाएं साथ साथ विकसित हुई। संगीत शास्त्रविज्ञों के अनुसार रागोत्पत्ति का मूल स्रोत 'शिव' है। इनके पांच मुखों से पांच राग तथा गिरिजा (पार्वती) के मुख से एक राग, इस

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

तरह कुल छह रागों की उत्पत्ति हुई। प्रत्येक राग की पांच वधुओं को मिलाकर 36 राग–रागिनियां हुई। पहाड़ी शैली में राग–रागिनियों को और विस्तार दिया गया। इस तरह राग–रागिनियों की संख्या 36 से बढ़कर 84 तत्पश्चात् 108 तक पहुंच गई।[4] प्रमुख छह रागों को छह ऋतुओं में विभाजित किया गया। 1.बसन्त, 2, ग्रीष्म, 3, वर्षा 4, शरद, 5, हेमन्त, 6, शिशिर। इसी क्रमानुसार हिण्डोल, दीपक, मेघ, भैरव, श्री तथा मालकौंस रागों की अवधारणा मानी गई। इसके अतिरिक्त दिन एवं रात्रि के प्रहरों के आधार पर गायन एवं वादन का समय निश्चित किया गया। प्रमुख छह रागों को भैरव, मालकौंस, हिण्डोल, दीपक श्री तथा मेघ राग– क्रम में स्वीकार किया गया परन्तु रागिनियों की संख्या एवं नामों में क्षेत्रीय प्रभाव के कारण अन्तर दृष्टिगत होता है।[5]

भारतीय तत्व दर्शन में त्रिगुणात्मिका सृष्टि के तीन रंग माने गये हैः सत्व का श्वेत, रजस का लाल एवं तमस का काला। काव्य शास्त्रीय आचार्यो ने रसों के भी रंग माने हैं। श्रृंगार का श्याम, क्रोध का लाल, करूण का भूरा (कपोत वर्ण), भय का काला, अद्भुत का सुवर्णाभ पीत, हास्य का श्वेत, वीर का गौर वर्ण, वीभत्स का नील एवं शान्त रस का भी श्वेत वर्ण माना है। हरा रंग आशा एवं समृद्धि का द्योतक है। मनोविज्ञान के अनुसार रंगों का प्रभाव आकृति से कम नहीं होता।[6] रंग के माध्यम से किसी भी आकार को पूर्णता दी जाती है तथा सौन्दर्य वृद्धि के साथ साथ वस्तु– सादृश्य एवं प्रतीकता की सृष्टि की जाती है। रंगों के तीन प्रमुख गुण है– रंगत, बल एवं घनत्व। रंगत के आधार पर लाल, पीला एवं नीला मुख्य रंग स्वीकृत है। इन रंगों से अन्य रंगों का निर्माण होता है। चमकदार एवं अमिश्रित रंगों में अधिक घनत्व होता है। रंगों का प्रभाव हमारे तन मन पर पड़ता है। किसी रंग के प्रकाश अथवा छाया के रूप को 'बल' कहते हैं। रागों पर आधारित रागमाला चित्रकृतियां रंगों के कारण ही जीवन्त हो उठी हैं।

शास्त्रीय रागों में नायिकाओं एवं ऋतुओं का भी वर्णन किया गया है। राजस्थानी लघु चित्र शैली में **बारहमासा' एवं नायिका** भेद आदि में प्रकृति अंकन प्रायः अलंकारिक एवं प्रतीकात्मक दृष्टिगत होता है। ऋतुओं के अनुसार रंगों का प्रयोग जैसे चैत्र ऋतु में रंगों की रंग बिरंगी छटा, वैशाख में न्यून हरितिमा तथा ज्येष्ठ ऋतु में पीत वर्ण की अधिकता दर्शायी गई है। श्रावण में हरित पृष्ठभूमि, मेघपूरित नभ तथा स्याह आकाश दृष्टिगत होता है। भारतीय ऋतु चित्रण रंग एवं रेखांकन के माध्यम से भाव अभिव्यक्तिकरण में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। संभवतः रागमाला चित्रों की मूल प्रेरणा ऋतु गीतों एवं नायिका भेद से ली गई है। विभिन्न रागों का गायन समय तथा ऋतु निर्देश अनेक संगीत ग्रंथों जैसे –अहोबल कृत 'संगीत–पारीजात' (1665 ई0) देवकृत 'रागरत्नाकर' (1673 ई0), गोविन्द दीक्षित कृत 'संगीत–सुधा' (1614–40 ई0), दामोदर कृत संगीत दर्पण (1625 ई0) में दिया गया है, जिनके आधार पर प्रमुखतः रागमाला चित्र अंकित किये गये। रागमाला के छन्दों में लछिमन का नाम भी उल्लेखित हुआ है तथा लाल एवं प्यारे रंग लाल के द्वारा पद्यांकित रागमाला चित्र ब्रिटिश संग्रहालय में संगृहीत हैं।[7]

संस्कृत, हिन्दी, ब्रज एवं फारसी रागमालाओं में विभिन्न राग–रागिनियों के लक्षण एवं ध्यान प्रस्तुत किये गये हैं। दामोदर भट्ट ने संगीत दर्पण में **भैरव राग** का ध्यान निम्नानुसार दिया :–

गंगाधरः शशिकला तिलक स्त्रिनेत्रः सर्वे विभूषितत गूजकृति वासाः ।
भास्वत्रिशूलकर एष नृमुण्डधारी शुभाम्वरो जयति भैरव आदि रागः ।।

जिसके मस्तक से गंगा बहती हो, कपाल पर चन्द्रकला का तिलक हो, जिसके तीन नेत्र हो, जिसने अपने शरीर पर हस्ति चर्म धारण किया हो, जिसके हाथ में त्रिशूल भासित हो, गले में मुण्डमाल हो तथा जिसके वस्त्र श्वेत हो, वह **राग–'भैरव'** है।[8] हिन्दी एवं फारसी रागमाला अनुसार भी 'भैरव राग' के यही लक्षण हैं। यह राग शरद ऋतु में गाया जाने वाला प्रातः कालीन राग हैं। लगभग समस्त चित्रशैलियों में 'भैरव राग' के अन्तर्गत शिव की सेवा सुश्रुषा करते नारी आकृतियों को दर्शाया गया है। ग्वालियर मोतीमहल के रागमाला भित्ती चित्र में 'राग भैरव' के अन्तर्गत शिव (राग भैरव) की सेवा करते पांच नारी आकृतियां (रागिनियां) दर्शित हैं। जिनका महाराष्ट्रीयन पहरावा, आभूषण आदि तत्कालीन संस्कृति को दर्शाते हैं।[9]

तानसेन का एक पद 'रागिनी–टोड़ी' पर प्राप्त होता है। दामोदर भट्ट ने टोड़ी–रागिनी' का लक्षण एवं ध्यान प्रस्तुत किया है। लक्षण :– मध्यमांश गृह न्यासा सौवीरी मूच्छर्नामता, सम्पूर्ण कथिता तज्ज्ञेतोड़ी श्री कोशिक मता। **ग्रहांशन्यासषड् जांच के चिदेना प्रचक्षते** ।। टोडी में मध्यम स्वर गृह अंश, न्यास हैं तथा सौवीरी मध्यम ग्राम की मूर्च्छना है। 'टोड़ी' कौशिक की भार्या है तथा सम्पूर्ण है। विद्वानों के मतानुसार इसमें षडज स्वर, ग्रह अंश, न्यास हैं। टोडी रागिनी का ध्यानः– **तुषारकुंदोज्जवल देहयष्टि : काशमीर कर्पूर विलिप्त देहा। विनोदयंती हरिणं बनांते वीणाधस राजति तोडिकेयम।**[10] जिसकी देह का वर्ण कुंदन अथवा हिम के समान निर्मल, स्वच्छ और श्वेत है, जिसने केशर और कपूर से शरीर को लेपित किया है, जो वन में मृगों से

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

विनोद करती है, जिसने अपने हाथ में वीणा ले रखी है। ऐसी शोभामयी कौशिक की भार्या '**टोड़ी**' है। प्रायः समस्त शैलियों में वन्य प्रदेष में हरिणों सहित नायिका को वीणावादन करते दर्शाया है। मेवाड़ शैली के चित्रकार ने शैलीगत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये चित्रांकन किया है। मेवाड़ के रागमाला लघु चित्र (लगभग 17वीं शताब्दी) में रागिनी–टोडी संयोजन में कलाकार ने रक्तिम वर्ण का कुशल संतुलन तथा सम्पूर्ण संयोजन में दूरी एवं निकटता का आभास देकर वन्य प्रदेश में टीले पर बैठी नायिका को वीणा वादन करते, मंत्रमुग्ध हरिणों के साथ अंकित किया है। नायिका के पार्श्व में अन्य नारी आकृतियां दृष्टव्य है।[11]

इसी तरह मालवा शैली में '**राग–हिण्डोल**' के अन्तर्गत मेघ पूरित नभ, पीत–हरित वर्णीय पृष्ठभूमि में हिण्डोल अर्थात झूले पर झूलते नायक –नायिका, पांच परिचारिकाओं सहित चित्रांकित हैं। परिचारिकाएं रागिनियां हैं, जो राग हिण्डोल 'नायक' के आसपास सेवारत दर्शायी हैं। वृक्षों पर मयूराकृतियां, कलरव करते पक्षी, समक्ष सरोवर में खिलते कमल 'सावन' ऋतु के आगमन का संकेत दे रहे हैं।[12]

इसी तारतम्य में 'संगीत–दर्पण' में दामोदर भट्ट ने '**आसावरी रागिनी**' को मलयाचल शिखर पर मोरपंख का वस्त्र धारण कर, गजमुक्ताओं के मनोहर हारों से सुसज्जित, चन्दन के वृक्षों से लिपटे सर्पो को लेकर शरीर पर धारण करे, नील आभायुक्त वर्णित किया है।[13] लगभग यही लक्षण सभी शैलियों में दृष्टिगत होते हैं। ग्वालियर मोतीमहल में चित्रांकित '**रागिनी–आसावरी**' में भी उपरोक्त वर्णनानुसार चित्रांकन किया गया है।[14] 'रागिनी– आसावरी' का गायन समय दिन का द्वितीय प्रहर माना है।

रागमाला चित्रण, ''ऋतु–चित्रण'' अथवा **''नायिका–भेद''** चित्रण से अत्याधिक साम्य रखते हैं। जैसे :– राग मेघ का अंकन वर्षा ऋतु के सदृष्य हुआ, राग दीपक में जलते दीपक का अंकन हुआ। शास्त्रीय ग्रंथों में इसका गायन समय ग्रीष्म ऋतु की संध्या है परन्तु चित्रांकन में यह आवष्यक नहीं समझा गया। कुछ शैलियों में दीपक राग का चित्रांकन रात्रि दृष्य के साथ हुआ। कुछ राग–रागिनियों का चित्रांकन काव्य अथवा राग–लक्षणों से अधिक श्रेष्ठ हुआ जैसे – राग टोड़ी, कुकुभ, गौरी तथा मधुमाधवी आदि। कहीं कहीं शासक अथवा चित्रकारों की कल्पना के फलस्वरूप राग लक्षणों से भिन्न भी चित्रांकन किया गया जैसे– 'रागिनी–गूजरी'। समस्त रागमाला ग्रंथों में गूजरी, षोडषी नायिका के रूप में वर्णित की गई है परन्तु ग्वालियर मोतीमहल की भित्ती रागमाला में 'गूजरी–रागिनी' के अन्तर्गत प्रौढ़ा नायिका को जंगल में भैंस चराते दर्षाया है।

संभवतः रागमाला कलाकार (चित्रकार) संगीत विषय के ज्ञाता नहीं थे इसीलिये संगीत स्वरों के ज्ञान के अभाव में कलाकारों ने राजदरवारी संगीतज्ञों द्वारा निर्देषित राग लक्षणानुसार अथवा शासक के आदेषानुसार एवं रागों के नामानुसार चित्रांकन किया। रागमाला कलाकारों ने स्वरों की गहराई तक पहुंच कर चित्रांकन नहीं किया। संगीतज्ञों द्वारा स्वरों को प्रदत्त रंग, पुस्तकों तक सीमित रहे। राग–रागिनी चित्रों में रंग स्वरों के अनुसार प्रयुक्त नहीं हुये। चित्रण करते समय कलाकार को सम्पूर्ण संयोजन से तालमेल बैठाते हुये रंग चयन करना पड़ता है। संगीत के अनेक विद्वानों ने रागों का चित्रण पसन्द नहीं किया परन्तु प्रायः संगीत ज्ञानियों ने स्वरों को प्रदत्त रंगों का उल्लेख अवष्य किया।[15]

विभिन्न मतानुसार विभिन्न शैलियों में रागमाला चित्रण हुआ। प्रत्येक मत में भिन्न–2 राग रागिनी वर्गीकरण है। राग–रागिनियों के स्वरूप में भिन्नता है। इसीलिये कलाकार स्वरों एवं रागों के रंगों में नहीं बंधा है। जिस क्षेत्र में जिस मतानुसार चित्रांकन हुआ, उसी मत के अन्तर्गत लिखित पदों के आधार पर चित्रांकन हुआ। रंगों का चयन प्रत्येक स्थान पर भिन्न रूप में दृष्टिगत हुआ।

अतः स्पष्ट है कि संगीतज्ञों ने राग–रागिनियों के संदर्भ में कोई अंतिम मान्यता नहीं दी। यही कारण है कि सभी शैलियों में भिन्न राग–रागिनियों का चित्रण होने से रंग चयन में भी भिन्नता आई। रागमाला चित्रों में रंग प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त हुये तथा चित्रों के भावों को उभारने में रंगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्र कमांक 01

चित्र कमांक 02

चित्र कमांक 03

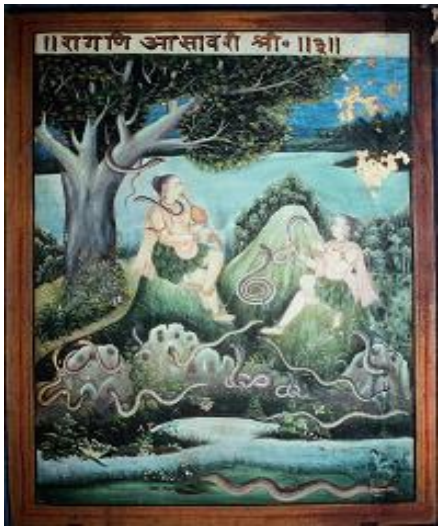

चित्र कमांक 04

संदर्भ –

गैरोला वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, 1963, पृ051–52
बसंत, संगीत विषारद, 23 वां संस्करण, 1999, पृ0क0 33
बसंत, संगीत विषारद, 23 वां संस्करण, 1999, पृ0क0 559–560
एबिलिंग क्लॉस, रागमाला पेण्टिंग 1972, पृ0 30–32
मिश्र रमानाथ मध्यकालीन भारतीय कलाएं और उनका विकास पृ0क0 22

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अग्रवाल गिर्राज किषोर, कला समीक्षा, 1970, पृ0क0 135
अग्रवाल गिर्राज किषोर, कला और कलम, पृ0क0 131–132
द्विवेदी हरिहर निवास, तानसेन जीवनी, व्यक्तित्व तथा कृतित्व, प्रथम संस्करण 1986 पृ0क0 73
कृपया देखें चित्र क्रमांक 01 राग –भैरव, ग्वालियर मोतीमहल भित्ति चित्र।
द्विवेदी हरिहर निवास, तानसेन जीवनी, व्यक्तित्व तथा कृतित्व, प्रथम संस्करण 1986 पृ0क0 219
कृपया देखें चित्र क0 02–रागिनी टोड़ी (मेवाड़) लघु–चित्र।
कृपया देखे चित्र क0 03 –राग हिण्डोल (मालवा) लघु चित्र।
श्री खण्ड शैल षिखरे षिखि पिच्छवस्त्रा, मातंगा मौक्तक मनोहर हारवल्ली। आकृष्टाचन्दनत तरोरू रंग बहन्ती आसावरी बलयमुज्जवल नीलकान्तिः
कृपया देखें चित्र क0 04– 'रागिनी आसावरी' मोती महल ग्वालियर भित्ति–रागमाला।
भातखण्डे वि.ना. , संगीत शास्त्र, भाग 3, पृ0 20–22